IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान : एक अध्ययन

प्रभा परमार[1] and डॉ. विद्युत प्रकाश मिश्रा[2]
शोधार्थी (वाणिज्य), शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[1]
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (वाणिज्य), राजभानु सिंह स्मारक महाविद्यालय, मनिकवार, जिला रीवा (म.प्र.)[2]

सारांश

भारत के हृदय स्थल में विराजमान मध्यप्रदेश के तकरीबन मध्य में खजुराहो से 57 कमी. की दूरी पर जिला पन्ना में पन्ना राष्ट्रीय उद्यान विद्यमान है। यह भू–भाग विश्व में हीरों के लिए सर्वाधिक विख्यात है। यहां पर भारत की अनेक सबसे उत्तम वन्य जीव प्रजातियां मिलती है तथा यह क्षेत्र राष्ट्र का एक सबसे अनोखा एवं अद्वितीय टाइगर रिजर्व है। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में वन्य बिल्लियों के अतिरिक्त एंटीलाप, हिरण और बाघ भी पाया जाता है। भारत का सुविख्यात पर्यटन आकर्षण केन्द्र, खजुराहो के पास होने की वजह से पन्ना उद्यान में एक व्यापक पर्यटन आकर्षण निर्मित की पर्याप्त संभावना समाहित है। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान राष्ट्र का द्वितीय 'सरिस्का राष्ट्रीय उद्यान' की संज्ञा प्रदान की जाती है। पन्ना उद्यान भारत का बाइसवां राष्ट्रीय तथा मध्यप्रदेश की 5वां राष्ट्रीय उद्यान है। इस राष्ट्रीय उद्यान को 'विश्व वन्य जीव कोष' से भी वित्तीय मदद प्रदान किया जा रहा है।

प्रस्तावना

जिला पन्ना का संरक्षित वन तथा छतरपुर जिला के कई संरक्षित वन पूर्व में पन्ना, छतरपुर तथा बिजावर रियासतों के शासकों का शिकारगाह था। वर्ष 1975 में उपस्थित उत्तरी एवं दक्षिणी पन्ना वन विभाग के क्षेत्रीय जंगलों से 'गंगऊ वन जीव अभ्यारण्य' को निर्मित की गयी। पश्चात् के साथ संलग्न 'छतरपुर वन संभाव' के अनेक भागों को इसी अभ्यारण्य में सम्मिलित कर दिया गया। वर्ष 1981 में गंगऊ वन जीव अभ्यारण्य का नाम परिवर्तन कर उसके जगह पर पन्ना राष्ट्रीय उद्यान अस्तित्व में आ गया। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान उत्तर विन्ध्ययन पर्वत श्रृंखलाओं में विद्यमान भारत में विस्तारित हुयी है। इस उद्यान का क्षेत्रफल 542.67 वर्ग किमी. है और इसकी समुद्र तल से ऊंचाई करीब 212–338 मीटर तक है। भौगोलिक दृष्टिकोण से जिला पन्ना के अंतर्गत अभ्यारण्य को सामान्यतः तीन मुख्य भागों में विभाजित करते हैं– 1. केन नदी की घाटी, ऊपरी तालगांव पठार एवं 3. मध्य हिनौता पठार।

जिला छतरपुर में अभ्यारण्य के भाग में सुन्दर एवं आकर्षक पर्वत श्रृंखलाएं विद्यमान है। इस भाग में गर्मी माह मार्च से माह जून के दूसरी व तीसरी सप्ताह में प्रारंभ हो जाती है। गर्मी के दिनों में इस क्षेत्र का तापमान तीव्रता से बढ़ जाता है, दिन के तापमान के साथ–साथ रात्रि के तापमान में भी वृद्धि हो जाती है जिसके कारण यहां गर्मी बढ़ जाती है। इस भू–भाग में सर्वाधिक गर्मी मई व जून माह होता है। जिले में 15

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

जून तक मानसून में नवाचार आ जाने के वजह से मौसम में बदलाव आ जाता है। जिले में वर्षा 15 से 20 जून की समयावधि में होना प्रारंभ हो जाता है। सर्वाधिक वर्षा जुलाई एवं अगस्त माह में होती है। जिले में वर्षा सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह तक होती है। जिला में सर्दी ऋतु 15 नवम्बर से धीरे–धीरे शुरू हो जाती है। सर्वाधिक ठण्डी दिसम्बर व जनवरी माह में पड़ती है। यहां पर ठण्डी के दिनों में ओले भी पड़े हैं जिसके कारण तापमान काफी न्यून हो जाता है। जिले में ठण्डी ऋतु मध्य फरवरी तक रहता है।

पन्ना अभ्यारण्य के मध्य तकरीबन 55 किमी. तक टेढ़ी–मेढ़ी मार्गों से होकर केन नदी का जल प्रवाहित होता है। इस नदी के जल बहाव की दिशा दक्षिणी से उत्तरी की तरफ है अर्थात् केन नदी उत्तरी दिशा की ओर प्रवाहित होती है। इस नदी के कारण पन्ना बाघ रिजर्व का दृश्य बड़ा ही आकर्षण दृष्टिगोचर है। अतः इसके वजह से इस रिजर्व का उल्लेख कुछेक अभ्यारण्य में की जाती है। इस नदी की कंदरायें और झरने अद्‌भुत एवं अद्वितीय प्राकृतिक सुन्दरता को महसूस कराती है। इसकी अनोखी दृश्य देखकर पर्यटकों का मन मुग्ध हो जाता है। वास्तव में केन नदी पन्ना बाघ रिजर्व की जीवन रेखा है। इस क्षेत्र में अनेक पर्वत, घाटियां, गुफाएं एवं कंदराये मौजूद है।

पन्ना जिले में सम्पन्न जैव विविधता परिलक्षित होता है। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के उत्तरी दिशा में केन नदी की जलधारा प्रवाहित होती है। इसमें घड़ियाल एवं मगरमच्छ भी मिलते हैं। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में रैप्टाइल पार्क भी विकसित किया जा रहा है। जिले के जंगल का राजा टाइगर (पेंथेरा टाइग्रिस) को मानी जाती है। यह टाइगर जिले के सुरक्षित वन में स्वतंत्र होकर घूमता–फिरता रहता है, परन्तु टाइगर के साथ चीता, भूरा भेड़िया, हाइना, जंगली कुत्ते एवं छोटी बिल्लियां भी पायी जाती है। राष्ट्रीय उद्यान में नीलगाय एवं चिंकारा घास के खुले मैदानों में घूमते हुए दिखलायी पड़ते हैं, विशिष्ट स्वरूप किनारे की तरफ सर्वाधिक पाये जाते हैं। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में अनेक तरह के सर्प की प्रजाति के साथ अजगर एवं अन्य सरीसृप जीव मिलते हैं।

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में तकरीबन 200 से अत्यधिक पक्षियों की प्रजातियां मिलती है, जिनमें कई प्रवासी पक्षी सम्मिलित हैं। यहां पर बार हेडिड बोज, सफेद गर्दन वाले स्टार्फ, हनी बजार्ड, ब्लास्म हेडिड पाराकिट, हनी बजार्ड, पैराडाइज फ्लाइकेचर, स्नेटी हेडिउ सिमीटार बैबलर इत्यादि अनेक नाम के पक्षी मलते हैं।

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना वर्ष 1981 में हुआ था जो कि भारत का एक राष्ट्रीय उद्यान है। जिसका विस्तार मध्यप्रदेश के विंध्या पहाड़ियों के बीचों–बीच पन्ना एवं छतरपुर जिलों में है। क्षेत्रफल में इसका विस्तार तकरीबन 543 वर्ग किमी. तक है। पन्ना नेशनल पार्क पूर्व में गंगऊ अभ्यारण को नेशनल पार्क का स्थान मिला है। इसके अलावा ''इसे रेप्टाइल पार्क'' के नाम से भी जाना जाता था। वर्ष 1994–1995 में भारत के बाघों की संख्या में लगातार आ रही कमी को देखते हुए भारत सरकार और वन मंत्रालय ने भारत के कुछ राष्ट्रीय उद्यानों को बाघ परियोजना में सम्मिलित कर लिया। इसी समय पन्ना राष्ट्रीय उद्यान को भी ''बाघ परियोजना'' में सम्मिलित किया गया। अब इसे ''पन्ना टाइगर रिजर्व'' के नाम से जाना जाता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान को वर्ष 2007 में भारत सरकार द्वारा ''उत्कृष्टता पुरस्कार'' प्रदान किया जा चुका है। भारत के राष्ट्रीय उद्यानों में सबसे अत्यधिक व्यवस्थित और साफ स्वच्छ राष्ट्रीय उद्यान होने की वजह से इसे उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

कालान्तर में पन्ना छतरपुर एवं बिजावर राज्यों के शासक इस भू–भाग में शिकार किया करते थे। मान्यता है कि पाण्डवों ने भी अपने वनवास का सर्वाधिक समय पन्ना में व्यतीत किया था और इस बात का चिक्र महाभारत ग्रन्थ में भी मिलता है। मध्य प्रदेश पर्यटन उद्योग द्वारा हीरों की नगरी पन्ना को धार्मिक एवं पर्यटन स्थल सुनिर्धारित किया गया है। जिनमें अनेक दर्शनीय स्थल है जहां पर सर्वाधिक रूप से पर्यटक भ्रमण करने आते हैं। इन पर्यटन स्थलों में पन्ना राष्ट्रीय उद्यान भी आता है। यहां के राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटकों का आना–जाना लगा रहता है।

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के वनस्पति में प्रमुख रूप से सागौन, तेंदू, महुआ, गुंजा करधई, धाओरा, सलई, खैर, बेल, पलास, अर्जुन, साजा, अमलताश, आंवला, आम, चंदन, नीम एवं कल्लू इत्यादि पाये जाते हैं। उद्यान में वन्यजीवों में बाघ, तेंदुआ, भूरी चित्तीदार बिल्ली, सेही, रीछ, फोरहोर्नड एंडीलोप अथवा चिंकारा, नीलगाय तथा चित्तीदार हिरण अथवा चीतल, सांभर, जंगली बिदल्ली, लकड़बग्घा, जंगली कुत्ता, सियार तथा भेड़िया इत्यादि प्रमुख रूप से पाये जाते हैं। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में लगभग दो सौ से अत्यधिक पक्षियों की प्रजातियों का शिनाख्त किया जा चुका है। और राज्य पक्षी का स्थान प्राप्त दूधराज (पैराडाइज फलाइज कैचर) पन्ना में मिलती है। पन्ना टाईगर रिजर्व में सरलतापूर्वक देखे जाते वाले पक्षियों में मोर, बगुला, फाख्ता, तोता, तीतर, टिटहरी, बटेर, मौखियां, कलचिड़ी, पवई मैना, चील, देशी तोता, भट, नीलकंट नौरंग, डोगरा इत्यादि प्रमुख रूप से पाये जाते हैं। पन्ना जिले के पन्ना टाईगर रिजर्व के वनों में भारतीय अजगर, कोबरा, भारतीय गोह तथा इसके अलावा केन नदी में मगरमच्छ एवं घड़ियाल भी पाया जाता है।

निष्कर्ष

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में वन्य जीवों और वन्य प्राणियों हेतु सर्वाधिक उत्तम और अनुकूल रहवास की व्यवस्था उपलब्ध करवाया गया है। इस रिजर्व में काफी भू–भाग में घास के कैदान है, जिसकी देख–रेख प्रत्येक साल किया जाता है। घास के मैदानी भाग को हमेशा मेनटेन करके रखा जाता है ताकि यहां पर आने वाले पर्यटकों को अपनी तरफ सहजता से आकर्षित कर सके। यहां के समस्त पार्क में वन्यजीवों के लिए स्थान–स्थान पर गुफाएं निर्मित किये गये हैं तथा सर्वाधिक घने जंगल भी विस्तारित है, जो वन्यजीवों एवं जन्तुओं हेतु सर्वोत्ताम रहवास का भाग उपलब्ध करवाते है। पन्ना टाईगर रिजर्व में वन्य जीव–जन्तुओं को भ्रमण करने के लिए पर्याप्त जगह है। इस उद्यान का ेत्रफल लगभग 542.62 वर्ग किमी. में विस्तारित है और यह वन विंध्यन रेंज में विद्यमान है। पन्ना टाईगर रिजर्व में नाइट सफारी का भी आनन्द उठाया जा सकता है। पार्क से होकर प्रवाहित होने वाली नदी वन की सौन्दर्यता में चार चांद लगाते हैं और यहां पर नाव में पर्यटक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

बैठकर वन्य जीव–जन्तुओं को काफी नजदीक से देखकर आनन्द उठा सकते हैं। पन्ना टाईगर रिजर्व की प्रमुख आकर्षणों में एक आकर्षण यहां का अत्यधिक मनमोहक पांडव झरना है, जोकि झील में गिरता है। इस झरने के बारे में लोगों द्वारा कहा जाता है कि पांडवों ने अपने वनवास के समयावधि के दौरान यहां पर विश्राम किये थे। इसके तिरिक्त अन्य दूसरे आकर्षणों में यहां का एक राजगढ़ पैलेस है, जो कि शिल्प एवं कला का अद्वितीय नमूना माना जाता है।

आज पन्ना टाइगर रिजर्व 56 बाघों का घर है, यहां कई वन्य प्राणी देखने को पाये जाते हैं। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में नीलगाय, चिंकारा, जंगली बिल्ली, सांभर, मगरमच्छ और घड़ियाल इत्यादि पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बने हुए है। इस उद्यान में करीब 200 से ज्यादा पक्षियों की प्रजातियां है जिसमें प्रवासी पक्षी भी शामिल है। इस प्रवासी पक्षियां दूर के भू–भागों से यहां पर आते हैं तथा इनके अतिरिक्त पन्ना टाईगर रिजर्व में सापों की अनेक प्रजातियां भी पायी जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ –

[1]. पन्ना राष्ट्रीय उद्यान (हिन्दी) इण्डिया वाटर पोर्टल, 2014

[2]. सक्सेना, एस.एम., पर्यावरण भूगोल, वर्ष 2018–19

[3]. पन्ना टाईगर रिजर्व फोल्डर, पन्ना, मध्यप्रदेश, 2004

[4]. शर्मा, के.के. – भारत में पर्यटन, क्लासिक पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1991

[5]. निर्मल, रमेश – मध्यप्रदेश एक टूरिस्ट नजर, महिश्मति प्रकाशन, उज्जैन, 1983

[6]. चौपड़ा, सुधीता – भारत के पर्यटन एवं विकास, आशीष पब्लिशिंग, नई दिल्ली, 1991

[7]. संकेतक दर्शिका, पन्ना टाईगर रिजर्व, पन्ना, मध्यप्रदेश, 2010